B.A. PART – 1

हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न :- हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन, ~~एवं~~ नामकरण एवं सीमा निर्धारण करें या प्रकाश डालें?

उत्तर – मोटे तौर पर हिन्दी भाषा का विकास 1000 ई० के आसपास माना जाता है। तब से लेकर अब तक लगभग 1000 वर्षों का जितना भी साहित्य हिन्दी प्रदेश में उपलब्ध होता है, वह हिन्दी साहित्य है। हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक इतिहासकारों ने काल-विभाजन का कोई प्रयास नहीं किया। न तो गार्सा-द-तासी के इतिहास में इस प्रकार का कोई प्रयास है, और न ही शिवसिंह सेंगर द्वारा रचित "शिवसिंह सरोज" में। सर्वप्रथम सर जार्ज ग्रियर्सन ने "मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ ~~हिन्दुस्तान~~ हिन्दुस्तान" में कालक्रमानुसार वर्णन करते हुए सम्पूर्ण पुस्तक को ग्यारह खण्डों में विभक्त किया है, जिन्हें स्थूल रूप से काल-विभाजन कह सकते हैं, परन्तु वह कोई व्यवस्थित काल-विभाजन नहीं है, फिर भी इतिहासकारों द्वारा हिन्दी साहित्य का किया गया काल ~~विभा~~ विभाजन, नामकरण एवं सीमा निर्धारण इस प्रकार हैं –

1. ग्रियर्सन का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा

इनकी पुस्तक के ग्यारह अध्याय एक-एक कालखण्ड को प्रस्तुत करते हैं, जिनके नाम हैं,

~~(1) चारण काल (700–13~~

(i) चारण काल (700 से 1300 ई०)
(ii) पन्द्रहवीं शताब्दी का धार्मिक पुनर्जागरण
(iii) जायसी की प्रेम कविता
(iv) ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय (1500 से 1600 ई०)
(v) मुगल दरबार
(vi) तुलसीदास
(vii) रीतिकाव्य (1580 से 1692 ई०)
(viii) तुलसीदास के अन्य परवर्ती कवि (1600 से 1700 ई०)

2.

(ix) अठारहवीं शताब्दी
(x) कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान
(xi) महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान

2. मिश्र बन्धुओं का कालविभाजन नामकरण एवं सीमा

(अ) आरम्भिक काल — इनका दो भाग है,
(i) पूर्व - आरम्भिककाल (700 से - 1344 वि० सं०)
(ii) उत्तर - आरम्भिककाल (1345 से 1444 वि० सं०)

(ब) माध्यमिक काल — इसका भी दो भाग है,
(i) पूर्व - माध्यमिककाल (1445 से 1560 वि० स०)
(ii) प्रौढ़ - माध्यमिककाल (1561 से 1680 वि० स०)

(स) अलंकृतकाल — इसके दो भाग है,
(i) पूर्व अलंकृतकाल (1681 से 1790 वि० सं०)
(ii) उत्तर अलंकृतकाल (1791 से 1889 वि० सं०

(द) परिवर्तनकाल (1890 - से 1925 वि० स०)
(य) वर्तमानकाल - (1926 वि० स० से अब तक)

3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा

(i) वीरगाथा-काल — सं० 1050 से 1375 वि०
(ii) भक्तिकाल — संवत 1375 से 1700 विक्रमी
(iii) रीतिकाल — सं० 1700 से 1900 वि०
(iv) गद्यकाल — सं० 1900 से 1984 वि०

4. डॉ० रामकुमार वर्मा का काल-विभाजन, नामकरण एवं सीमा

(i) सन्धिकाल – सं० 750–1000 वि०
(ii) चारणकाल – सं० 1000–1375 वि०
(iii) भक्तिकाल – सं० 1375–1700 वि०
(iv) रीतिकाल – सं० 1700–1900 वि०
(v) आधुनिककाल – सं० 1900 से आगे

5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा.

(i) आदिकाल – सं० 1000–1350 वि०
(ii) भक्तिकाल – सं० 1350–1700 वि०
(iii) रीतिकाल – सं० 1700–1900 वि०
(iv) आधुनिक काल – सं० 1900 से आगे।

नोट:- 6 [illegible] गया है।

7. (6) अद्यतन उपलब्ध सामग्री के आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा इस प्रकार है—

1. आदिकाल (1000 ई० से 1350 ई०)
2. भक्तिकाल (1350 ई० से 1650 ई०)
3. रीतिकाल (1650 ई० से 1850 ई०)
4. आधुनिक काल (1850 ई० से अब तक)

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

1. प्रश्न – हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा निर्धारण करें?
2. प्रश्न ग्रियर्सन द्वारा किये गये हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा बतायें?
3. प्रश्न मिश्रबन्धुओं के हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा पर प्रकाश डालें?

5. प्रश्न- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा बताएँ ?

6. प्रश्न डॉ० रामकुमार वर्मा एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा दिये गये हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा पर प्रकाश डालें ?

नोट :- अगर किसी एक साहित्यकार का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा पूछा जायेगा, तो उस विभाजन को मात्रा में बढ़ा कर लिख देना है, ताकि 1½ या दो पेज बन सके।

पता.

डॉ० समदर्शी कुमार
(B.R.A.B.U.M) — विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो० न० - 7909046087

दिनांक - 03.02.2023